जून अंक

सादर इंडिया

1 जून 2012
ज्येष्ठ-अषाढ़, विक्रम संवत 2069
वर्ष 3, अंक 9

संरक्षक
एवं
प्रधान संपादक
शील मधुर

संपादक
सीमा शील

कार्यकारी संपादक
स्नेह मधुर

सहायक संपादक
अपराजिता

विज्ञापन
नरेश भंडारी

प्रचार-प्रसार
संजय वर्मा, 09357343020
राजीव कुमार जैन, 09899146018

संपादकीय कार्यालय
प्लॉट नंबर : 130, सेक्टर-28
गुड़गांव-122002 (हरियाणा)

पत्राचार कार्यालय
प्लॉट नं. - 44, सेक्टर-56
गुड़गांव-122002 (हरियाणा)
Phone : 0124-4101235
(सुबह 10 से 12 तक)
SMS - 09313859501

www.saadarindia.com
email :
info@saadarindia.com
or
editor@saadarindia.com

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक सीमा शील द्वारा सादर इंडिया, प्लॉट नंबर 130, सेक्टर-28, गुड़गांव के लिए प्रकाशित और जैक ऑफसेट वर्क्स, 81, 82 बी, संजय कॉलोनी इंडस्ट्रियल एरिया, एनआईटी फरीदाबाद, हरियाणा से मुद्रित।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं। इससे पत्रिका की सहमति का होना अनिवार्य नहीं है। किसी प्रकार के विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र गुड़गांव, हरियाणा होगा।

पत्रिका के सभी पद अवैतनिक हैं।

NATION FIRST 06

A CONFERENCE ON MULTI CULTURALISM 08

NARCISSUS MEETS FACBOOK 10

रबीन्द्रनाथ टैगोर :
पितामह 12

प्रेमचंद की कहानी : गुरुमंत्र 16

जयशंकर प्रसाद की कहानी :
छोटा जादूगर 18

फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी :
कुसुमलाल 20

साक्षात्कार : सुधा ओम ढींगरा 22

दिलीप भाटिया की कहानी :
बचपन के एक बाबू जी थे 56

FATHERS' DAY 57

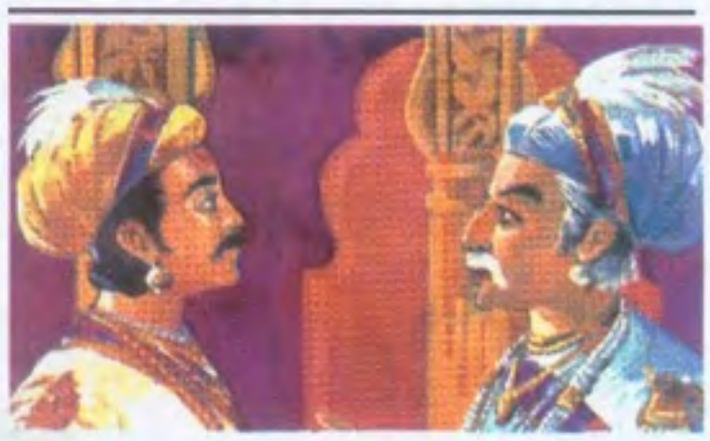

हंसी के पल 58

कहानियां

सुधा ओम ढींगरा	कमरा नं. 103	24
डॉ. श्याम सखा 'श्याम'	विडम्बना	27
मुकेश शर्मा	खिलाड़ी के साथ खेल	30
कृष्ण कुमार यादव	एक कश्मीरी	32
किशोर श्रीवास्तव	राहत	34
डॉ. मुक्ता	पटरियों पर दौड़ती जिंदगी	35
सुकेश साहनी	कोल्ड वेव	38
भीमराव गणवीर	एहसास	40
शैल चन्द्रा	पच्चीस साल बाद	42
डॉ. विकास मानव	श्मशानी ताबीज	44
प्रद्युम्मन भल्ला	बड़े भइया	46
राजेश्वर प्रसाद गुप्ता	बिटिया का रिश्ता	50
सीमा शील	अनपढ़ माँ	54

जिस तेज़ी से पश्चिमी संस्कृति अपना रहे हैं, हिन्दी भी उसी गति से अपनाएँगे

सुधा ओम ढींगरा

आप अपनी कहानियों के माध्यम से स्त्री-विमर्श और स्त्रियों को समाज में समान अधिकार के लिए कितनी जागरूकता ला पाई हैं?

अनिता जी, साहित्य सृजन और सामाजिक जागरूकता दो अलग विषय हैं। रचनाकार अपनी रचनाओं में सामाजिक विद्रूपताओं, शोषण, महिलाओं की स्थिति का चित्रण कर समाज के सामने उनकी दशा प्रस्तुत करता है और पाठकों को उस मुद्दे पर सोचने के लिए मजबूर करता है। जागरूकता और परिवर्तन तो सामाजिक संस्थाएँ एवं सामाजिक प्रणेता ही ला सकते हैं। पाठक अगर किसी रचना को पढ़कर उस पर गहन चिन्तन ही कर ले तो लेखक का लिखा सार्थक हो जाता है। वहीं से जागरूकता और परिवर्तन का बीज पड़ता है। वैसे लेखक कभी यह सोचकर नहीं लिखता कि यह रचना स्त्री विमर्श की है, समीक्षक और आलोचक ही उसे वर्गों में बाँटते हैं। यह भी नहीं कह सकते कि साहित्य क्रांति नहीं लाता। अमेरिका में 1852 में हैरिएट बिचर स्टोव ने एक उपन्यास लिखा था 'अंकल टॉमस् कैबिन' और यह उपन्यास गुलाम अश्वेतों के जीवन का सजीव चित्रण करता 1852 में लिखा गया पहला ऐसा उपन्यास था जिसने अश्वेतों में क्रांति की लहर पैदा कर दी थी। इस पुस्तक की अमेरिका में उस समय 310,000 प्रतियाँ बिकी थीं और इससे तीन गुना इंग्लैंड में जो कि उस समय एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी। इसका प्रभाव यह हुआ कि अमेरिका के उत्तरी प्रान्तों में अश्वेतों को गुलाम बनाने के विरुद्ध आवाज़ उठाई गई और कई प्रश्न चिन्ह लगाए गए। चाहे अमेरिका के दक्षिणी भाग ने इसे दबा दिया और 1857 में मैरीलैंड के एक स्वतंत्र अश्वेत किसान और प्रचारक को उसके घर से पकड़कर 10 वर्षों के लिए जेल भेज दिया क्योंकि उसने इस उपन्यास में दी गई सामग्री को अश्वेतों में जागृति और प्रेरणा पैदा करने के लिए प्रयोग किया था। अमेरिका के दक्षिणी प्रान्तों में अश्वेतों को स्वतंत्रता दिलवाने में इस उपन्यास का बहुत बड़ा हाथ माना जाता है, चाहे वर्षों लग गए अश्वेतों को स्वतंत्रता प्राप्त करने में। पूरी दुनिया के साहित्य में इस तरह के बहुत से उदाहरण हैं; जब साहित्य समय, समाज और जनहित को लेकर लिखा गया और वह समाज में परिवर्तन ले आया। हाँ, कुछ महिलाओं के पत्र, ई-मेल्स और फ़ोन काल्स ज़रूर ऐसे आते हैं, जिसमें कहा हुआ होता है कि आप की कहानियाँ हमारा दर्द कहती हैं।

आप पिछले तीस वर्षों से अमरीका में रहकर लेखन कर रही हैं। उस दौर के लेखन में और आज के लेखन में आप क्या अन्तर पाती हैं?

अनिता जी, मैं पिछले तीस वर्षों से अमेरिका में रह ज़रूर रही हूँ; पर तीस वर्षों का निरन्तर लेखन है, यह नहीं कह सकती। पिछले बारह-तेरह सालों से निरन्तर कार्य चल रहा है। शादी करके जब मैं यहाँ आई तो पत्रकार, कहानीकार, कवयित्री, कलाकार जाने क्या-क्या थी, सबकुछ छूट गया और बस कामकार बन गई। यूनिवर्सिटी में साइकलॉजी पढ़ने लगी। यहाँ तक की डिग्री लिए बिना इस देश में कुछ कर नहीं सकती थी। सेंट लुईस मिजूरी में शादी के बाद आई थी और पता चला कि वहाँ का वाशिंगटन विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग खोलना चाहता है और प्राध्यापक की ज़रुरत है। हिन्दी की पीएचडी काम आई, विभाग खुल गया और पढ़ाने लगी, साथ-साथ अपनी पढ़ाई भी पूरी करने लगी। धोबी, बावर्ची, सफाईवाली, हलवाई पता नहीं क्या-क्या बन गई। उस समय के अमेरिका और आज के अमेरिका में बहुत अन्तर है। भारतीय कम थे। भारत और भारतीयों के प्रति स्थानीय लोगों में उदारता कम थी। मैं परिवेश, संस्कृति और भाषा की चुनौतियों में उलझ कर रह गई। संवेदनशील हूँ। लगा कि भाषा का प्रचार-प्रसार जरूरी है, वह पहली प्राथमिकता बन गई। अस्मिता का प्रश्न था, बच्चों को भाषा से ही संस्कृति सिखाई जा सकती थी। अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी समिति के साथ जुड़ गई और रेडियो प्रोग्राम चलाने लगी, जिसका प्रसारण हिन्दी में होता था। शादी से पहले मैं रेडियो, टीवी और रंगमंच की कलाकार थी, वह अनुभव काम आया। छोटे बच्चों के लिए हिन्दी का स्कूल खोला। कहने का भाव कि भीतर बहुत कुछ सिमटने लगा, पर कलम की नोंक पर नहीं आया, लेखन कुछ समय के लिए थम गया। पाँच वर्षों की ख़ामोशी के बाद कलम उठाई। साल में एक या दो कहानियाँ लिखी जातीं। वे छपने भेजती। समय लेकर वे भारत में छपतीं। कविताएँ यहाँ-

वहाँ छप जातीं। धीमी गति से काम चलता रहा। मुझे यहाँ आकर अपने आप को सँभालने में बहुत समय लगा।

अंतरजाल के आने तक यहाँ हिन्दी का माहौल बन गया था और मेरी ज़िम्मेदारियाँ भी कम हो गई थीं। भीतर का लेखक भी उठ खड़ा हुआ और वर्षों के अनुभवों से भरा पड़ा बंद संदूक खुल गया। उस समय के लेखन में नास्टेल्जिया अधिक था। विषय सीमित थे। अपनाए हुए देश को स्वीकारा नहीं गया था। दो संस्कृतियों के मूल्यों का टकराव, पूर्व- पश्चिम का अन्तर, अंर्तद्वंद उस समय की कहानियों का मुख्य विषय था। आज लेखन में परिपक्वता आ गई है। विषयों में व्यापकता है। एक नई व्याकुलता, बेचैनी तथा एक नए अस्तित्वबोध व आत्मबोध का साहित्य है जो हिन्दी साहित्य को अपनी मौलिकता एवं नए साहित्य संसार से समृद्ध करता है।

आज भारत की छवि के साथ-साथ साहित्य लेखन में भी आए परिवर्तन को आप किस रूप में लेती है?

साहित्य समाज का दर्पण है तो साहित्य में यह परिवर्तन आना स्वाभाविक है। साहित्य की प्रगति का यह सकारात्मक सन्देश है। वैश्वीकरण और अंतरजाल ने दुनिया को सीमित कर दिया है। भारतीय जीवन दर्शन में पनपती पश्चिमी सोच अब विदेशों में रचे जा रहे साहित्य के लिए सम्पादकों, आलोचकों और पाठकों को सोचने और समझने पर मजबूर कर रही है। पश्चिमी जीवन मूल्यों और भारतीय जीवन मूल्यों के बीच की खाई बहुत बड़ी थी जो स्वयं भारत में ही कम होती जा रही है। भारत में जिसे आत्म-प्रदर्शन और आत्म-विज्ञापन की संज्ञा दी जाती है, वह अमेरिका में अपने आप को उद्धरित करना कहलाता है। जीवन दर्शन का यह मूलभूत अन्तर अमेरिकी हिन्दी साहित्य का मूल कथ्य भी है। इस कथ्य को अब भारत में नकारा नहीं, समझा जा रहा है। भारत में तेज़ी से बदलते मूल्य, जीवन दर्शन और हिन्दी साहित्य, अमेरिका की संस्कृति, स्वतंत्र सोच, उससे पनपे विचार और उन विचारों से रचित साहित्य को स्वीकारने लगा है। पूरे विश्व के रचनाकार अंतरजाल पर एक दूसरे से परिचित हो जाते हैं जो कुछ वर्ष पहले तक सम्भव नहीं था।

आपने लेखन कब से शुरू किया और सबसे पहली रचना कौनसी थी आपकी?

मैं पोलिओ सर्वाइवल हूँ और बचपन में खेल नहीं पाई अतः ऊर्जा और दर्द कहीं तो निकलना था। छुटपन से ही लिखने लगी थी। पहली रचना कौन सी थी याद नहीं। हाँ जो पहली कविता 'दैनिक हिन्दी मिलाप' के बाल स्तम्भ में छपी, वह थी 'खो गई'।

आप कहानी, कविता और लेख सभी विधाओं में लिखती है, और सभी विधाओं पर सहज रूप से आपकी बहुत अच्छी पकड़ है। आपको इसकी प्रेरणा कहाँ से मिलती है?

अनिता जी, मैं सिर्फ लिखती हूँ। विचार विधाएँ स्वयं ही ढूँढ लेते हैं। मेरे लिए साहित्य तो खाना-पीना, ओढ़ना-बिछौना है। इश्क करती हूँ इससे और प्रेरणा भी इसी से ही मिलती है।

आप की राय में आज न्यू मीडिया के युग में साहित्यकार को अन्तर्जाल और वेब दुनिया से कितना जुड़ना चाहिए?

उतना ही जिससे उसकी सृजनात्मकता प्रभावित न हो।

आप हिन्दी-चेतना की संपादिका है, साहित्यकार और पत्रकार दोनों हैं, आपकी नज़रों में हिन्दी साहित्य का भविष्य क्या होगा?

मैं बहुत सकारात्मक सोच की हूँ। जो भाषा चीन की भाषा मैंडरिन को भी पीछे छोड़ रही है उसके साहित्य का भविष्य बहुत उज्ज्वल है। अंतरजाल पर वेब पत्रिकाओं, ई-पत्रिकाओं, चिट्ठे, ई-बुक्स का प्रसार और बढ़ जाएगा। विश्व के कोने-कोने से पाठक इसके साथ जुड़ेंगे। विश्व की विभिन्न भाषाओं में हिन्दी साहित्य का अनुवाद होगा जो इसे वृहद् फलक देगा। मुद्रित पत्रिकाओं और पुस्तकों को भी अंतरजाल पर बड़ा बाज़ार मिलेगा। मेरी नज़रों में हिन्दी साहित्य का भविष्य बहुत सुन्दर और संतोषप्रद है।

पत्रिका का सम्पादन और साहित्य-लेखन में आप किस कार्य को ज्यादा चुनौतीपूर्ण मानती हैं?

अनीता जी, दोनों की अपनी प्रतिबद्धताएँ हैं। लेखन विचारों, विषय और मूड पर निर्भर करता है। संपादन समय की निर्धारित सीमा में कैद रहता है। मैं दोनों का आनन्द लेती हूँ, इसलिए चुनौतीपूर्ण नहीं मानती।

भारत में लोग अँग्रेजी के तरफ भाग रहे हैं, इसके विपरीत आप अमरीका में हिन्दी के प्रचार-प्रसार का कार्य वर्षों से कर रही हैं, दोनों देशों में हिन्दी भाषा के भविष्य के बारे में आप क्या कहना चाहेंगी?

देखें, मैं पहले भी कह चुकीं हूँ, बहुत आशावान् हूँ। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है, बेशक इस समय अंग्रेज़ी उसे प्रभावित कर रही है पर हिन्दी का कुछ बिगाड़ नहीं सकती। इतिहास साक्षी है कि हर देश, हर काल में समय का चक्र कभी भाषा और कहीं संस्कृति को प्रभावित करता रहा है। (हँसते हुए) लगता है पश्चिम से हिन्दी भारत लानी पड़ेगी, तब भारतवासी चेतेंगे। जिस तेज़ी से पश्चिमी संस्कृति अपना रहे हैं, हिन्दी भी उसी गति से अपनाएँगे।

भारत में महिला साहित्यकार और अमरीका में बसी महिला साहित्यकारों के लेखन में क्या कुछ अंतर पाती हैं आप, या दोनों आपकी नज़रों में समान हैं?

महिलाएँ पूरी दुनिया में एक सामान हैं। अन्तर परिवेश और सामाजिक सरोकारों का है। भारत में जिस स्त्री- विमर्श की बात होती है, अमरीका में बसी महिला साहित्यकारों का लेखन उससे आगे शुरू होता है। स्वतंत्र महिला के शोषण, चिन्तन, देह की आज़ादी के बाद की चुनौतियाँ, विदेशी समाज के सरोकार, विद्रूपताओं, विसंगतियों को चित्रित करता संवेदनशील, प्रवासी भारतीयों की मानसिकता को उकेरता, दो संस्कृतियों के टकराव में टूटते जीवन मूल्यों, रिश्तों की बारीकी को बुनता, प्रवासवास के अकेलेपन से जूझता लेखन है।

विदेशों में हो रहे कहानी लेखन के बारे में आपका दृष्टिकोण क्या है? क्या यह कहानी लेखन भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति के सामंजस्य और टकराव दोनों परिस्थितियों को सही मायने में चित्रित करता है।

अनिता जी, विदेशों में लिखी जा रही कहानियाँ संस्कृतियों के टकराव से पैदा हुई परिस्थितियों से कहीं आगे निकल चुकी हैं। यहाँ की कहानियों में बाज़ारवाद, व्यक्तिवाद, भौतिकवाद और देहवाद के साथ-साथ यहाँ के जीवन की व्याकुलता, बेचैनी तथा एक ऐसे अस्तित्वबोध व आत्मबोध का परिचय भी मिलता है जो भारत के लिए नया है।

साहित्य सर्जन के लिए प्रवासी शब्द के इस्तेमाल से आप कितनी सहमत है?

देश से बाहर रहते हैं, प्रवासी तो हम हैं पर हमारे लेखन को प्रवासी न कहें। वह बात चुभती है।

लेखन के साथ-साथ आप अमरीका में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए कवि-सम्मेलन और नाटकों का भी आयोजन समय-समय पर करती रहती हैं, इतनी ऊर्जा कहाँ से पाती हैं आप?

मुझे स्वयं नहीं पता चलता कैसे है? सबकुछ हो जाता है। मेरे ख़्याल से सकारात्मक सोच और हिन्दी के लिए कुछ करने की चाह सबकुछ करवा देती है।

हिन्दी साहित्य में आपको किसका लेखन प्रभावित करता है?

सच कहूँ, अभी तक मैं एक विद्यार्थी हूँ और नए पुराने बहुत से लेखकों से सीखती हूँ और प्रभावित रहती हूँ।

प्रस्तुति : डॉ. अनिता कपूर

सुधा ओम ढींगरा

101, गैमन कोर्ट, मोरिसविले,
न्यूयार्क सिटी-27560
यूएसए। मो. 9198010672

कमरा नं. 103

बार्नज़ हस्पताल के कमरा नम्बर 103 में प्रवेश करते ही, नर्सें टैरी और ऐमी पिंजरे से छूटे पक्षियों सी चहचहाने लगती हैं और यह कमरा उन्हें खुले आकाश सा लगता है। जहाँ वे अपनी बातों की ऊंची उड़ान भर सकती हैं। दोनों जानती हैं, बिस्तर पर पड़ी मिसेज़ वर्मा चिरनिद्रा में हैं और वे निस्संकोच हस्पताल की राजनीति, प्रबंधकों की बेईमानी, जो उन्होंने ईमानदारी के आँचल से ढकी हुई है, के किस्से, एक दूसरे के साथ साझा कर सकती हैं। किस रोगी के टेस्ट बार-बार करवा कर, हेल्थ इंशोरेंस का पैसा, हस्पताल को दिलवाया जा रहा है, कौन सा रोगी स्टाफ की लापरवाही का शिकार हो रहा है, किस मरीज़ की ओर अधिक ध्यान दिया जा रहा है...., और फलाँ डाक्टर के फलाँ नर्स के साथ सम्बन्ध हैं, की बातें करके, अपने मन की भड़ास निकाल कर वे काम का तनाव भी कम कर लेती हैं। उनकी बातें कमान से निकले तीर सी किसी को घायल नहीं करतीं, सीधे कमरे की चारदीवारी से टकरा कर, सुरक्षित उनके पास लौट आती हैं।

मिसेज़ वर्मा बेहोश हो गई थीं। उसके बाद होश में नहीं आईं। उनका हृदय, लीवर, किडनी और निकास मार्ग सब अंग काम कर रहे हैं, पर वे आँखें नहीं खोल पातीं । किसी बात पर कोई प्रतिक्रिया नहीं देतीं। हाथ-पाँव शिथिल व निष्क्रिय हो गए हैं। खून और दिमाग़ के सभी टेस्ट हो चुके हैं, निश्चित रूप से डाक्टर किसी भी निर्णय पर नहीं पहुँच पाए हैं ... मस्तिष्क का वह हिस्सा, जो इन इन्द्रियों को सन्देश देने की क्षमता रखता है, मृतप्राय नहीं है ... देखने सुनने की शक्ति से वंचित वे नहीं हो सकतीं, क्योंकि इन इन्द्रियों से जुड़ा दिमाग़ का हिस्सा भी ठीक है । ऐसा लगता है, किन्हीं कारणों से इन्द्रियों का मस्तिष्क से तालमेल टूट गया है। डाक्टर उन कारणों को समझने की कोशिश कर रहे हैं... जो उनकी पकड़ में नहीं आ रहे। इसीलिए वे संभ्रमित हैं। उन्हें ऐसा महसूस होने लगा है कि मिसेज़ वर्मा के भीतर जीने की इच्छा, जीवन संघर्ष व अपनों की ठोकरें चुरा ले गई हैं। वे जीना ही नहीं चाहतीं और वही सन्देश शरीर को मिल रहा है ....

अपनों ने जीवित रहने की उनकी चाह को वापिस लाने के लिए कुछ किया भी नहीं। उनके पास आकर नहीं बैठे.. उनका हाथ पकड़ कर बातचीत नहीं की, उन्हें कभी कोई संगीत नहीं सुनाया..इस तरह के मरीज़ों के लिए यह बहुत लाभदायक और प्रभावकारी होता है।

हस्पताल में उन्हें एडमिट करवाने उनका बेटा और बहू आए थे... उनकी गम्भीर अवस्था को देखते हुए, उन्हें आईसीयू में रखा गया था। बेटे और बहू को एक दो बार आईसीयू के बाहर लॉबी में बैठे देखा गया। ज्योंही उन्हें आईसीयू से कमरा नंबर 103 में स्थानांतर किया गया, उस दिन से आज तक, उनके बेटे और बहू की किसी ने सूरत नहीं देखी ...वे उन्हें घर के फालतू सामान की तरह हस्पताल छोड़ गए और अब डाक्टर भी उन्हें वहाँ से किसी नर्सिंग होम में भेजने की सोच रहे हैं..अमेरिका में नर्सिंग होम ऐसे रोगियों की शरणस्थली है, जिन्हें लम्बे उपचार और अपनी दिनचर्या के लिए सहायक की आवश्कता होती है और परिवार के सदस्य जिनकी देख-रेख करना नहीं चाहते या किसी कारणवश कर नहीं सकते। नर्सिंग होम भेजने के लिए बेटे ने बहुत जल्दी स्वीकृति दे दी। हस्पताल जीवन मृत्यु से खेल रहे रोगियों के लिए है.... हालाँकि मिसेज़ वर्मा के शारीरिक लक्षण गम्भीर होते हुए भी, उनकी चिरनिद्रा की स्थिति भयावह नहीं है।

मिसिज़ वर्मा शायद वर्षों से बहुत कुछ कहना चाहती थीं। किसी को कुछ कह नहीं पाईं और अपने संवेगों को अपने में ही छुपाती रहीं, अंदर ही अंदर घुटती रहीं। स्वार्थ और कमीनापन शब्दों ने उन्हें फिर तरंगित कर दिया। विचारों और सोचों का रेला आया और उथल-पुथल मचाने लगा। वर्षों से रोका हुआ आवेश लावा बन फूटने की स्थिति में आ गया, शिराओं में रक्त संचार बढ़ा पर शरीर की शिथिलता ने उसे भीतर ही पिघला दिया...

प्रतिदिन के वार्तालाप का केंद्र बिंदु हस्पताल और नर्सें आज उनकी बातचीत से गौण हो गया है। टैरी और ऐमी के दिमाग़ में आज कमरा नंबर 107 घूम रहा है, थोड़ी देर पहले ही उस कमरे में पड़े रोगी रॉबर्ट की साँसों के तार टूटे हैं।

मिसेज़ वर्मा के पास आकर टैरी उन्हें देखते हुए बोली, ''ऐमी इन्हें नर्सिंग होम भेज दिया जायेगा ..।''

''हाँ, डाक्टर भी क्या करें..टेस्ट कुछ कह रहे हैं और शरीर उनके प्रतिकूल प्रतिक्रिया दे रहा है..।''

''पता नहीं ये ऐसे कितने दिन जिंदा रह पाती हैं। कमरा नंबर 107 वाला रॉबर्ट तो जल्दी चला गया।''

''वह गहरे कोमा में था, उसके मस्तिष्क का अधिकतर भाग मृतप्राय था। इनके टेस्ट तो कोमा नहीं दिखा रहे, पर शारीरिक लक्षण अर्ध कोमा बता रहे हैं... ऐसे में मस्तिष्क और इन्द्रियों को उत्तेजित करने की ज़रुरत होती है...।''

''सही कह रही हो, कुछ साल पहले 210 नंबर के कमरे में एक ऐसा ही रोगी था। उसे लिखने का शौक था। उसके परिवार का कोई एक सदस्य, रोज़ कुछ घंटों के लिए, उसके पास बैठ कर पुस्तकें पढ़ा करता था। किताबों की किन बातों ने उसे उद्दीप्त कर दिया। उसके शरीर में संचेतना का संचार होना शुरू हो गया।''

''कमरा नंबर 107 वाले रॉबर्ट का शरीर बहुत भारी था और उसकी सफ़ाई करते समय हमारी काफ़ी ऊर्जा और समय लगता था।'' मिसेज़ वर्मा का स्पंज बाथ करने से पहले की तैयारी करते हुए ऐमी ने कहा।

''हाँ, मिसेज़ वर्मा तो बहुत हल्की हैं, बिल्कुल फूल जैसी...अच्छा तुम ग्लूकोस की शीशी और स्टैंड को थोड़ा परे करो।''

दोनों ने मिल कर उन्हें दाईं तरफ मोड़ा। कमलेश वर्मा के गाऊन को खोलते हुए धीमे स्वर में उनकी बातचीत आरम्भ हो गई।

''साऊथ एशियंस अपने बुजुर्गों को बुढ़ापे में अपने देश क्यों नहीं भेज देते.. यह देश उन्हें अपना नहीं लग सकता..।''

''लगेगा कैसे? वे यहाँ पैदा नहीं हुए। पीढ़ी दर पीढ़ी उनकी यहाँ कोई पहचान नहीं। जड़ें उनकी अपने देश में हैं। अधेड़ उम्र में वे बच्चों के पास रहने आते हैं..धड़ यहाँ रहता है और आत्मा वहीं उनके अपने देश में...।''

''टैरी, यहाँ आने से पहले मैं एक नर्सिंग होम में काम करती थी। वहाँ एक वृद्ध भारतीय महिला मिसिज़ भसीन थीं। उनका ऑस्टियोप्रोसिस काफ़ी बिगड़ गया था। चलने- फिरने, उठने बैठने की समस्या थी। उनका बेटा समृद्ध था, घर में एक नर्स का इंतजाम कर सकता था, पर वह उन्हें वहाँ छोड़ गया। मिसिज़ भसीन को भाषा की समस्या थी। थोड़ी बहुत अंग्रेज़ी वे समझती थीं। शुद्ध शाकाहारी थीं और गिना-चुना भोजन ही वे पचा पाती थीं। अपने गॉड की पूजा करना चाहती थीं...नर्सिंग होम में वे कर नहीं सकती थीं..धूप और जोत जलाना वहाँ मना था, बस हर समय रोती रहती थीं कि गॉड उन्हें उठा ले।''

''पुअर लेडी, गाड ब्लेस हर....''

''मैंने उसके बेटे से कहा था, अगर अपनी माँ का भला चाहता है, तो उन्हें भारत भेज दो।''

''क्या कहा उसने..?'' टैरी ने मिसिज़ वर्मा की पीठ और टाँगों पर छोटे से तौलिये पर साबुन लगा कर घुमाते हुए कहा ।

कहने लगा, ''मैडम, मेरे अलावा मेरी माँ की देख-भाल करने वाला कोई नहीं है...किसके पास छोड़ूँ वहाँ..?'' मुँह बनाते हुए और उसकी नकल उतारते उसने कहा।

''उस समय दिल करता था, उसे कहूँ कि, यहाँ कौन सा तुम अपनी माँ का ध्यान रख रहे हो, अपनी माँ को हमारे हवाले ही तो किया हुआ है।''

''ऐसे लोगों को कहना चाहिए। भारत में किसी भी वृद्ध आश्रम में छोड़ देता, अपने लोगों में रहतीं, अपनी भाषा बोलतीं, अपनी पसंद का भोजन खातीं। सहायता तो भारत में बहुत मिल जाती है, सबसे बढ़कर अपने गॉड की पूजा कर पातीं।''

''नहीं कह पाई टैरी, मुझे उस समय नौकरी की बहुत ज़रुरत थी। डर गई, अगर चीफ को रिपोर्ट कर देता, तो नौकरी चली जाती। पर मैंने उसकी माँ का ध्यान बहुत रखा।''

''कैसीं है अब वे ...?''

''पागल हो गई हैं, यहाँ आने के बाद मैंने पता किया।''

''ऐमी, मुझे इस उम्र में अगर किसी अजनबी देश, अनजान लोगों में, जहाँ भाषा, रहन-सहन, खान-पान मेरे स्वभाव और इच्छानुसार ना हो, रहना पड़े तो मैं भी पागल हो जाऊँ।''

ऐमी और टैरी की बातें मिसेज़ वर्मा को कहीं दूर से आती और गूंजती सुनाई दे रही हैं, जैसे कोई कुएँ से बोल रहा है...। पागल शब्द कानों के पर्दों के साथ ज़ोर से टकराया और मिसेज़ वर्मा का अवचेतन सचेत हुआ।

''मैं पागल ही हो गई थी।'' भीतर भावों का ज्वार-भाटा उठा और अभिव्यक्ति के लिए, निष्क्रिय हो गए शरीर के तट से टकरा कर लौट गया।

मिसेज़ वर्मा को बाईं तरफ मोड़ा गया और ऐमी ने गुनगुने पानी में नर्म-नर्म तौलिया भिगो कर उनके बदन को साफ करना शुरू किया।

''टैरी, कई भारतीय अपने माँ-बाप को बच्चों की देख-रेख के लिए यहाँ बुलाते हैं...डे केयर और बेबी सिटर का पैसा बचाते हैं।''

''तुम्हें कैसे पता...?''

''गुरप्रीत, मोना, जेबा, दामिनी सब नर्सें खुश हो कर बताती हैं...?''

''क्या...?''

''यही कि उन्होंने अपने माँ-बाप को बुलाया है। उनके आने से डे केयर और बेबी सिटर का पैसा बचता है और घर का सारा काम भी वे करते हैं। एक पंथ दो काज हो जाते हैं। माँ-बाप बच्चों से मिल लेते हैं, उनकी सहायता कर देते हैं और अमेरिका भी घूम लेते हैं।''

''अच्छा है, अपने पोते-पोतियों से खेल लेते हैं और दादा-दादी बच्चों में जो संस्कार डाल सकते हैं, वह काम कोई और नहीं कर सकता।''

''माँ-बाप को बुलाने के लिए उनकी यह सोच होती, तो मेरी बातचीत का विषय कुछ और होता।''

''तुमने उनकी बातों से क्या महसूस किया..?''

''स्वार्थ और कमीनापन...।''

''कैसे?''

मिसिज़ वर्मा शायद वर्षों से बहुत कुछ कहना चाहती थीं। किसी को कुछ कह नहीं पाईं और अपने संवेगों को अपने में ही छुपाती रहीं, अंदर ही अंदर घुटती रहीं। स्वार्थ और कमीनापन शब्दों ने उन्हें फिर तरंगित कर दिया। विचारों और सोचों का रेला आया और उथल-पुथल मचाने लगा। वर्षों से रोका हुआ आवेश लावा बन फूटने की स्थिति में आ गया, शिराओं में रक्त संचार बढ़ा पर शरीर की शिथिलता ने उसे भीतर ही पिघला दिया...

''मुझे मेरे बेटे का स्वार्थ और बहू का कमीनापन बहुत दिनों बाद पता चला..'' उनके स्नायुओं में हलचल हुई....

उन्हें सीधे बेड पर लिटाते हुए टैरी बोली, ''इनके शरीर में कम्पन सा होता महसूस हुआ।''

''हाँ, मुझे भी..लगा।''

''नहीं...नहीं यह हम लोगों का भ्रम है..पतले -दुबले हड्डियों के ढांचे को कपड़े बदलते हुए शायद हमें ऐसा लगा है।''

अवचेतना की सचेतता से प्रेरित सुप्त चेतना में संचेतन हुआ, ''अरे! मैं ऐसी नहीं थी...।''

मिसिज़ वर्मा का आन्तरिक चिन्तन और संवेग उनकी चेतना से उलझ रहे थे.. मनन शुरू हो गया...''मैं स्कूल में पढ़ाने वाली

अध्यापिका थी। अच्छे खुले बदन की थी। यहाँ आकर हड्डियों का ढांचा हो गई। पति कॉलेज में प्राध्यापक थे। अंकुर, हमारे बेटे को, हमने बड़े प्यार और दुलार से पढ़ाया था। आईआईटी में प्रथम आया था। जब उसने अमेरिका आने का फैसला किया तो हमने खुशी-खुशी उसे भेजा। यहाँ की एक भारतीय मूल की लड़की से उसे प्यार हो गया। उसके प्रेम को हमने स्वीकार किया। दो बार हम पति-पत्नी अमेरिका आए, पर बहू का स्वभाव कभी समझ नहीं पाए।''

''उसके लिए हम अंकुर के माँ-बाप हैं। हमारे प्रति वह अपना कोई उत्तरदायित्व नहीं समझती। हमारा ख़्याल रखना अंकुर की ज़िम्मेदारी है। वह अमेरिकन कल्चर में जन्मी-पली अमेरिकंज़ से भी चार कदम आगे की सोच रखने वाली लड़की है। घर की किश्त, रसोई भंडार की सामग्री, घर का छोटा-मोटा सामान, बिजली-पानी का बिल, सब का भुगतान दोनों आधा-आधा पैसा डाल कर करते हैं। वह अपने माँ-बाप की बहुत केयर करती है पर हमारा बेटा अपना फ़र्ज नहीं निभा पाया।''

''बेटे के प्यार में अंधी थी..यही सोचती रही बेटा बहुत समझदार है, सब ठीक कर लेगा। आठ साल तक दोनों के बच्चा नहीं हुआ। अंकुर के पिता जी पोते-पोती की इच्छा लिए इस संसार से चले गए। निमोनिया हुआ था उन्हें, बिगड़ गया और वे संसार के झंझटों से मुक्त हो गए। उनकी अंत्येष्टि पर बस अंकुर आया था, बहू नहीं।''

वे अतीत के तल से धीरे-धीरे गहरे उतर रही हैं .....मस्तिष्क में हलचल हो रही है .....

''टैरी तुम इन्हें संभालो..मैं बिस्तर की चादर पहले दाईं तरफ की बदलती हूँ, फिर बाईं तरफ की।''

''ऐमी तुमने बताया नहीं, तुम्हें कुछ साऊथ एशियंस के स्वार्थ और कमीनगी का कैसे आभास हुआ।''

''तुम्हें शायद मैंने कभी बताया नहीं, कुछ वर्ष मैंने सिटी हस्पताल में काम किया था। वहीं जान पाई थी, कई भारतीय और पाकिस्तानी अपने माँ-बाप को यहाँ बुला लेते हैं, पर हैल्थ इंशोयरेंस नहीं लेते। सब अच्छा कमाते हैं, पर दाँतों से पैसा बचाते हैं। माँ-बाप में से अगर कोई बीमार पड़ जाता है, तो उन्हें सिटी हस्पताल में बाहर से ही छोड़ जाते हैं, दवा-दारू का बिल, उनके नाम पर न पड़ जाए, इसके डर से वे उन्हें हस्पताल के अंदर छोड़ने नहीं आते। उन्हें इस बात का पूरा ज्ञान है कि, सिटी हस्पताल में जो रोगी प्रवेश कर गया, उसका उपचार करने से कोई डाक्टर इंकार नहीं कर सकता। माँ-बाप की चिकित्सा मुफ्त में करवाना चाहते हैं....और बीमार माँ-बाप, भाषा और खाने-पीने की परेशानी सहते पड़े रहते हैं वहाँ। बेचारे, किन कष्टों और पीड़ा से गुज़रते हैं, किसी को बता भी नहीं सकते। इन लोगों के घर देखो तो कितने बड़े-बड़े हैं और दिल इतने छोटे।'' वह भावुक हो गई।

''माँ-बाप इतना शोषण सहते क्यों हैं?''

''यह भी तो हो सकता है, वे उसे शोषण नहीं, बच्चों के प्रति अपना कर्त्तव्य समझते हों, साऊथ एशियंस का कल्चर और सोच हम लोगों से भिन्न है।'' ''ऐसा व्यवहार तो अमानवीय है, कोई कल्चर इसे प्रोत्साहित नहीं करता।''

इस वार्तालाप से मिसेज़ वर्मा बीते पलों के समंदर से भावनाओं के सैलाब के साथ उभरीं। ''टैरी- ऐमी, माँ-बाप ममता में लुट-पिट जाते हैं। मैं भी तो बेटे के प्यार में बिस्तर पर आ गई। पति की मौत के बाद मैं भारत में अकेली ज़रूर हो गई थी पर अपनों में थी। तुम ठीक कहती हो यह देश बड़े-बूढ़ों के लिए है ही नहीं। बहू गर्भवती हो गई तो बेटा मुझे लेने आ गया। उसने भावुक कर दिया। पोते-पोती का चेहरा देखने की अभिलाषा में मस्तिष्क से सोचना बन्द कर दिया और मैं दिल से सोचने लगी। बेटे के घर की स्थितियाँ भूल गई और उसके मोह पाश में बंधी उसकी हर बात स्वीकारती गई। उसने यह कह कर घर बिकवा दिया कि अब आप मेरे पास रहेंगी, इसका सारा पैसा आप के नाम करवा दूंगा। वहाँ आप किसी की मोहताज नहीं होंगी। पोते-पोती के साथ खुशी से रहिये, सपना आपकी बहू भी आपको कुछ कह नहीं पायेगी। बैंक में जमा पूँजी की चैक बुक ले कर मैं बेटे के साथ अमेरिका आ गई।''

''इनके बाल भी बना दें।'' टैरी ने उनके बालों में कंघी फेरते कहा ...। कमलेश वर्मा अपने आन्तरिक संसार में सोचों के कई पहाड़ छलांघती गईं --''कुछ ही दिनों में सच्चाई सामने आ गई। बहू का गर्भ गिर गया और मैं उन पर बोझ बन गई, मैं बच्चे की देख-रेख के लिए लाई गई थी, मेरा अब वहाँ क्या काम था ..पर मैं कहाँ जाती? घर बेच आई थी, और उस पैसे से बेटे ने अपने घर की किश्तें चुका दी थीं। स्वाभिमान मार कर बैठी रही। अचानक एक दिन बेटे को नौकरी से जवाब मिल गया। अब मैं उस घर में दीवार पर लगा मकड़ी का जाला थी, जिसे वे उतार कर फेंकना चाहते थे। मैं भारत लौटना चाहती थी, पर बेटे की सूरत रोक लेती।''

''मैं उस दिन जूड़ा ही बना रही थी, जब बेटे ने चैक बुक सामने पटकी और बोला - माँ सपना ने यह ढूँढी है। आप ने हमसे इसे छुपाया हुआ था। मैं पैसे-पैसे के लिए यहाँ मोहताज हूँ और भारत के बैंक में आप के नाम लाखों रुपये पड़े हैं। इस पर हस्ताक्षर कर दीजिए, आप के बाद यह पैसा मुझे ही मिलना है तो अब क्यों नहीं ...!'

एक दिन बेटे ने कहा, ''माँ मेरी नौकरी नहीं है। घर की सफ़ाई करने वाली हटा दी है, कुछ ख़र्चा बच जायेगा। आप घर में ख़ाली बैठे तंग आ जाते हैं, घर के काम-काज क्यों नहीं संभाल लेते।

''मैं झाड़ू-पोंछा करने लगी, कपड़े धोती, उन्हें प्रेस करती, खाना बनाती फिर भी पति-पत्नी में झगड़ा होता रहता, उनका झगड़ा क्यों होता, कारण नहीं जान पाई। मेरे सिर में दर्द रहने लगा। रक्तचाप बढ़ गया था, चेक करने के लिए बेटे को नहीं कह पाई?''

''ऐमी, इनके बाल लम्बे और रेशमी हैं, चल जूड़ा बना कर समेट देते हैं।''

''मैं उस दिन जूड़ा ही बना रही थी, जब बेटे ने चैक बुक सामने पटकी और बोला - माँ सपना ने यह ढूँढी है। आप ने हमसे इसे छुपाया हुआ था। मैं पैसे-पैसे के लिए यहाँ मोहताज हूँ और भारत के बैंक में आप के नाम लाखों रुपये पड़े हैं। इस पर हस्ताक्षर कर दीजिए, आप के बाद यह पैसा मुझे ही मिलना है तो अब क्यों नहीं ...!''

''सिर दुःख रहा था, रक्तचाप पहले से ही अधिक था.... बेटे का स्वार्थ हृदय को बींध गया। घबराहट हुई और मैं बेहोश हो गई....थैंक्स टैरी ..थैंक्स ऐमी ..मैं अब और शोषण नहीं सहूँगी ..लौट जाऊँगी अपनों में ...।''

दोनों अपना काम समाप्त कर बाहर जाने को तैयार थीं। ''टैरी एक बार देख लें, सब कुछ ठीक है..पाऊडर डाला है या नहीं..''

''हाँ देख लो, कई बार हम भूल जाती हैं.....

ऐमी मिसेज़ वर्मा को देखते ही एकदम बोली, ''टैरी जल्दी से डाक्टर को बुलाओ, जल्दी....इनकी आँखें खुली हैं ..... कोरों से पानी बह रहा है.....

■